लोकमत समाचार

डिजिटल प्रणाली से संवर्धित कृषि को बढ़ावा देने की जरूरत

आह्वान जैव विविधता पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राजेंद्र सिंह परोदा

परभणी में मंगलवार को वसंतराव नाईक मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि से जुड़ी तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ आरएस परोदा (बाएं) और इसमें उपस्थित मेहमान (दाएं).

लोकमत समाचार सेवा

परभणी: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक व पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित डॉ आरएस परोदा ने कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों को डिजिटल प्रणाली से संवर्धित व संरक्षित कृषि को बढ़ावा देने का आह्वान किया है.

वसंतराव नाईक मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय और इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स के सहयोग से 'अगली पीढ़ी की डिजिटल कृषि के लिए इंजीनियरिंग- नव कल्पना' विषय पर भारतीय कृषि इंजीनियरों की सोसाइटी की मेजबानी में आज 58वां वार्षिक सम्मेलन हुआ और तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ किया गया. इसमें डॉ आरएस परोदा बोल रहे थे. उन्होंने कहा कि आज कृषि उत्पादन तो बढ़ा है, परंतु फसलों पर कीटों का प्रकोप भी बढ़ गया है. हाल के समय में आपदाओं के कारण कृषि उत्पादन और भोजन की बर्बादी में वृद्धि हुई है. साथ ही भूमि की गुणवत्ता भी गिरती जा रही है. कृषि उपज पर प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करना आवश्यक है.

डॉ परोदा के मुताबिक भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण अब कृषि को समृद्ध बनाने के लिए सभी को प्रयास करने होंगे. कृषि क्षेत्र में युवाओं की भागीदारी कम है. इसे बढ़ाने की जरुरत है. युवाओं को नौकरियां खोजने की बजाए कृषि उद्यमी बनना होगा. उन्होंने कहा कि भारत दुनिया में ट्रैक्टरों का उत्पादन करने वाला सबसे बड़ा देश है और दुनिया में इसकी आधी हिस्सेदारी है. साथ ही कृषि इंजीनियरिंग के क्षेत्र से लेकर निराई-गुड़ाई की मशीनें, मशीनरी और उपकरण विकसित किए गए हैं जो खाद्यान्न, सोयाबीन, फल, सब्जी के प्रसंस्करण उद्योग के लिए बहुत उपयोगी और संभालने में आसान हैं.

इस मौके पर संगोष्ठी की स्मारिका, विवि का समाचार-पत्र, साल-2025 का कैलेंडर और एसोसिएशन के जर्नल की दो पत्रिकाओं का विमोचन अतिथियों ने किया. साथ ही कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया. कृषि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में योगदान के लिए एसोसिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स ऑफ इंडिया की ओर से सत्यानंद स्वैन और डॉ प्रीतम चंद्रा को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए. इसके अलावा संगठन के विभिन्न वैज्ञानिकों को उनके उल्लेखनीय कामों के लिए विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए.

कार्यक्रम में कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक रावसाहब भागड़े, कुलगुरु डॉ शरद गड़ाख, महिंद्रा ग्रुप के हेमंत सिक्का, टाफे ग्रुप के टीआर केशवन, माहिको के राजेंद्र बारवाले, इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स के कुमार बिमल, इंडियन एसोसिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स के पूर्व अध्यक्ष डॉ गजेंद्र सिंह, डॉ नवाब अली, डॉ वीएम मायंदे, पूर्व कुलगुरु डॉ केपी गोरे, कृषि अभियांत्रिकी डॉ एसएन झा, पूर्व कुलगुरु डॉ एएस ढवण, पीके साहू, विश्वविद्यालय के शिक्षा निदेशक डॉ उदय खोड़के, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ भगवान आसेश्वर, अनुसंधान निदेशक डॉ खीजर बेग, संतोष वेणीकर आदि उपस्थित थे.